REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2021

ईश्वर चंद्र विद्यासागर : महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण के प्रबल पक्षधर

मौमीता बसु [1] , रीता कुमारी शर्मा[2]
1शोध छात्रा , बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय ,धनबाद.
2 एसोसिएट प्रोफेसर , दर्शनशास्त्र विभाग, बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय ,धनबाद.

सारांश:

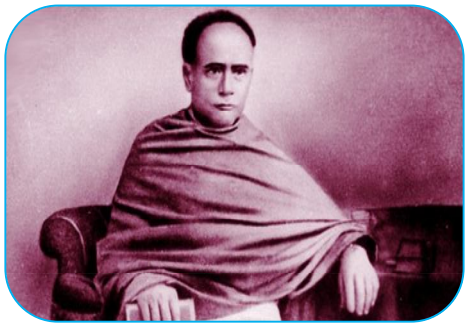

ईश्वर चंद्र विद्यासागर बंगाल पुनर्जागरण के स्तंभों में से एक थे. जो 1800 के दशक के प्रारंभ में राजा राममोहन राय द्वारा शुरू किए गए सामाजिक सुधार आंदोलन को जारी रखने में कामयाब रहे. विद्यासागर एक प्रसिद्ध लेखक, बुद्धिजीवी और मानवता के कट्टर समर्थक थे. उनके पास एक प्रखर और ओजस्वी व्यक्तित्व था और अपने समय के ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा भी पूजनीय था. उन्होंने बंगाली शिक्षा प्रणाली में एक क्रांति लाई और बंगाली भाषा को लिखने और पढ़ाने के तरीके को परिष्कृत किया. उनकी पुस्तक (पत्र से परिचय) अभी भी बंगाली भाषा सीखने के लिए परिचयात्मक पाठ के रूप में उपयोग की जाती है. विद्यासागर (ज्ञान का सागर) शीर्षक उन्हें कई विषयों में उनके विशाल ज्ञान के कारण दिया गया था।

ईश्वर चन्द्र नारी शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे. उन्होंने शिक्षा को उन सभी सामाजिक उत्पीड़न से मुक्ति दिलाने का प्राथमिक तरीका बताया, जो उस समय उन्हें झेलने पड़े थे. उन्होंने अपनी शक्ति का प्रयोग किया और लड़कियों के लिए स्कूल खोलने के लिए कड़ी मेहनत की और यहां तक कि उपयुक्त पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की. जिसने न केवल उन्हें शिक्षित किया, बल्कि उन्हें सुई वर्क जैसे व्यवसाय के माध्यम से आत्मनिर्भर होने में सक्षम बनाया जा सके. उन्होंने घर-घर जाकर परिवारों के प्रमुखों से अनुरोध किया कि वे अपनी बेटियों को स्कूलों में दाखिला लेने दें. उन्होंने पूरे बंगाल में महिलाओं के लिए 35 स्कूल खोले और 1300 छात्रों के नामांकन में सफल रहे. यहां तक कि उन्होंने नारी शिक्षा भंडार की शुरुआत की, जो इस कारण के लिए सहायता देने के लिए एक कोष था. 7 मई, 1849 को बेथ्यून स्कूल, भारत में पहली स्थायी लड़कियों के स्कूल की स्थापना के लिए जॉन इलियट ड्रिंकवाटर बेथ्यून को अपना समर्थन दिया।

समाज सुधारक के रूप में

दया नहीं, विद्या नहीं, उनके चरित्र का मुख्य गौरव था अजेय पौरुष, अक्षय मनुष्यत्व। विश्वकवि रविंद्रनाथ टैगोर ने यह बात उस महापुरुष के लिए कही थी, जिन्होंने पूरे भारतवर्ष में नारी शिक्षा, महिलाओं के अधिकार व विधवा पुनर्विवाह का कानून पास कराकर देश में नई चेतना को जन्म दिया।

विद्यासागर उस ज़ुल्म के बारे में हमेशा मुखर थे, जो उस समय महिलाओं पर अत्याचार करता था. वह अपनी माँ के बहुत करीब थे जो एक महान चरित्र की महिला थीं. जिन्होंने उन्हें हिंदू विधवाओं के दर्द और असहायता को कम करने के लिए एक बार कुछ करने के लिए निर्देशित किया था. जो कि अपमानजनक जीवन जीने के लिए मजबूर थीं. उन्हें जीवन के बुनियादी सुखों से वंचित रखा गया, समाज में हाशिए पर रखा गया. अक्सर गलत तरीके से उनका शोषण किया जाता था और उनके परिवार द्वारा उन्हें बोझ के रूप में माना जाता था. विद्यासागर का दयालु हृदय उनकी दुर्दशा नहीं कर सकता था और उन्होंने इन असहाय महिलाओं के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए इसे अपना मिशन बना लिया. उन्हें रूढ़िवादी समाज के उग्र विरोध का सामना करना पड़ा जिसने इस अवधारणा को कुछ विधर्मी करार दिया. उन्होंने ब्राह्मणवादी अधिकारियों को चुनौती दी और साबित किया कि वैदिक शास्त्रों द्वारा विधवा पुनर्विवाह को मंजूरी दी जाती है. उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों को अपनी दलीलें दीं और उनकी दलीलें सुनीं जब हिंदू विधवाओं का पुनर्विवाह पर बल दिया गया.

महिला सशक्तिकरण के लिए ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा उठाए गए आवश्यक कदम

ईश्वर चंद्र विद्यासागर (ईश्वर चंद्र बंद्योपाध्याय) उन्नीसवीं शताब्दी में भारत के पुनर्जागरण की प्रमुख कड़ियों में से एक थे। उन्होंने महिला सशक्तिकरण और समृद्धि के लिए अथक प्रयास किया था। वे एक शिक्षाविद, विचारक और उत्कृष्ट विद्वान थे। उनकी विशाल विद्वता के कारण ही उन्हें विद्यासागर – ज्ञान सागर की उपाधि प्रदान की गई। ईश्वर चंद्र विद्यासागर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक महान विद्वान होने के साथ-साथ एक अग्रणी समाज सुधारक भी थे। विशेष रूप से, महिलाओं के उत्थान ने उनके सामाजिक सुधार कार्यक्रमों से संबंधित उनके विचारों और कार्यों का केंद्र बनाया। उन्होंने सामाजिक स्थिति और अतीत में महिलाओं के सम्मान का अध्ययन किया।

उन्होंने अपने समय में उनकी दयनीय स्थिति के मूल कारणों का भी विश्लेषण किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि उनकी स्वतंत्रता, उचित सम्मान और सम्मान की बहाली के लिए और उन्हें समानता के दायरे में लाने के लिए महिलाओं को बाहर निकालना आवश्यक होगा। सामाजिक जटिल कुरीतियों देखते हुए उन्होंने महिलाओं के बीच शिक्षा पर जोर दिया। शिक्षा के अभाव में महिलाएं सामाजिक कुरीतियों की चपेट में थीं इसलिए, वे अपने मानवाधिकारों से वंचित थे और वास्तव में, जीवन के उद्देश्य से पूरी तरह अनजान थीं। ईश्वर चंद्र विद्यासागर के शब्दों में “शिक्षा अमूल्य खजाना (जीवन का) है। इस खजाने से से न केवल व्यक्तिगत स्तर पर कल्याण होता है, बल्कि समाज का बड़े पैमाने पर विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। ”

विद्यासागर ने शिक्षा और उसकी मूल भावना को दृष्टिगत रखते हुए, (अर्थात सभी के भीतर समान रूप से गुणों की प्राप्ति और विकास) विद्यासागर ने बंगाल से महिलाओं की शिक्षा और उन्हें सामाजिक बुराइयों की चपेट से बाहर निकालने के दोनों क्षेत्रों में अपना सामाजिक आंदोलन शुरू किया और समाज सुधार के कट्टर हिमायती बने।

महिलाओं के उत्थान, कल्याण, सशक्तिकरण और उत्थान के लिए उनका प्रयास मील का पत्थर साबित हुआ और वह लोगों के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत बना। महिलाओं की सामाजिक स्थिति, विशेषकर हिन्दुओं के भीतर, उन दिनों बेहद

दयनीय थी। जैसा कि उल्लेख किया गया है, सामाजिक बुराइयां पूरे देश में महिलाओं के लिए नरक जैसी स्थिति के लिए जिम्मेदार थीं और उन कुरीतियों को पुरुष प्रधान समाज ने उनपर थोपा था, विद्यासागर ने जनता को वास्तविकता का एहसास कराने का बीड़ा उठाया। उन्होंने महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने का संकल्प लिया और पुनर्विवाह के लिए जमीन तैयार की। यह कोई आसान काम नहीं था। लेकिन, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, जो नेक मानवीय कार्यों के लिए प्रतिबद्ध थे, सफल हुए।

उनके अथक संघर्ष का ही परिणाम था कि भारत सरकार ने 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया। यह वास्तव में सती विनियमन अधिनियम के बाद उठाया गया एक और क्रांतिकारी सामाजिक कदम था। विधवाओं के पुनर्विवाह के प्रावधान के कार्यान्वयन के लिए लोगों का समर्थन जुटाने के उद्देश्य से, उन्होंने अपने इकलौते पुत्र नारायण चंद्र बंद्योपाध्याय को एक विधवा से शादी करने के लिए प्रोत्साहित किया।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने भी बाल विवाह की बुराई के खिलाफ लड़ाई लड़ी और बहुविवाह का कड़ा विरोध किया। इन दोनों सामाजिक बुराइयों का महिलाओं की गरिमा और स्वाभिमान पर हानिकारक प्रभाव पड़ा था। उन्होंने इन सामाजिक बुराइयों के खिलाफ एक आंदोलन चलाया। बाद में स्वामी दयानंद सरस्वती (1824-1883) और स्वामी विवेकानंद (1863-1902) जैसी महान भारतीय हस्तियों ने भी इस दिशा में काम किया और उनके संचयी प्रयासों ने 1929 में बाल विवाह रोकथाम अधिनियम लाया। वैसे बहुविवाह के उन्मूलन के लिए उस दौर में विभिन्न उपाय किए गए थे। इस परंपरा को समाप्त इसलिए नहीं किया जा सका था कि भारत ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की थी।

विधवा-पुनर्विवाह कानून

विधवा महिलाओं के लिए मसीहा बन कर आए ईश्वर चंद्र विद्यासागर की तमाम कोशिशों के बाद विधवा-पुनर्विवाह कानून बना. आपको बता दें, उस समय हिन्दू समाज में विधवा होने के बाद महिलाओं की जिंदगी मान इतनी सुखद नहीं थी जितनी कि आज है. उन्होंने विधवा पुनर्विवाह के लिए लोकमत तैयार किया. उन्हीं के प्रयासों से साल 1856 में विधवा-पुनर्विवाह कानून पारित हुआ.

ये उनके अनवरत प्रचार का ही नतीजा था कि 'विधवा पुनर्विवाह क़ानून-1856' आखिरकार पारित हो सका. उन्होंने इसे अपने जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना था. वह उस दौर के पहले ऐसे पिता होंगे जिन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह भी एक विधवा से ही किया. उन्होंने 'बहुपत्नी प्रथा' और 'बाल विवाह' के ख़िलाफ़ भी संघर्ष छेड़ा.

महिला शिक्षा

महिला शिक्षा के क्षेत्र में ईश्वर चंद्र विद्यासागर का कार्य वास्तव में एक मील का पत्थर था। उन्होंने पूरे बंगाल में कई शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की। कलकत्ता का मेट्रोपॉलिटन स्कूल उनके द्वारा स्थापित संस्थानों में से एक था। सभी लड़कियां उनके द्वारा स्थापित संस्थानों में बिना किसी भेदभाव के पढ़ाई कर सकती थीं। इन स्कूलों का एकमात्र उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना था। इसके साथ ही लड़कियों में संस्कारों के प्रसार पर विशेष बल दिया गया। उन्हें भारत के अतीत के गौरव और भारतीय संस्कृति के अंतर्निहित सिद्धांतों के बारे में सिखाया गया। उनसे भारतीय राष्ट्रवाद की रक्षा करने की अपेक्षा की गई थी।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर का दृढ़ मत था, "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई कितना महान बन गया है; उसे अपने अतीत (की महिमा) को याद रखना चाहिए।" ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने देशवासियों से हजारों साल पहले स्थापित सनातन मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने भारतीयों से आशावादी बने रहने और भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांतों और शिक्षाओं के संरक्षण के लिए आगे आने और सामाजिक और मानव कल्याण के लिए एकजुट होने का आग्रह किया। आशावाद के संबंध में उन्होंने कहा, "जो नास्तिक हैं, उन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर ईश्वर में विश्वास करना चाहिए। इसी में उनका कल्याण रहता है।"

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने पूरे बंगाल में लड़कियों के लिए पैंतीस स्कूलों की स्थापना की। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने एक स्मारक कोष, नारी-शिक्षा बंदर की भी स्थापना की। यह उनकी प्रेरणा का परिणाम था कि बेथ्यून स्कूल, भारत का पहला महिला स्कूल, 1849 में कलकत्ता में अस्तित्व में आया। जॉन इलियट ड्रिंकवाटर बेथ्यून ने इसकी स्थापना की और यह वर्ष 1879 में एशिया का पहला महिला कॉलेज बन गया।

महिलाओं के उत्थान के लिए विद्यासागर के कार्य – उनकी आत्मनिर्भरता, समृद्धि और सशक्तिकरण के साथ-साथ नारी-शिक्षा के लिए उनके अथक प्रयास अद्वितीय हैं। इस विचार को केंद्र में रखते हुए उन्होंने कहा, "सामाजिक और राष्ट्रीय कारणों को प्राथमिकता देना एक जागरूक और सच्चे नागरिक का धर्म है।"

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने केवल स्त्रियों के उत्थान के लिए ही अपना पूरा जीवन होम नहीं किया, बल्कि समाज के वंचित तबकों को भी उन्होंने ऊपर उठाया. उनका मानना था कि सारे मनुष्य एक समान हैं, इसलिए किसी के साथ भेदभाव करना मनुष्यता के खिलाफ है।

उनका यह भी मानना था कि शिक्षा मनुष्य को विनम्र बनाती है और उसके आत्मविश्वास में वृद्धि करती है। इसी सिद्धांत पर चलते हुए उन्होंने अपने विद्यालयों के दरवाजे अछूतों के लिए भी खोल दिए थे। इससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। इस कारण से उनके कई साथी उनसे नाराज हो गए थे. लेकिन विद्यासागर ने उनकी नाराजगी को एक तरफ रखते हुए अपना ध्यान बस मानवता की सेवा में लगाया।

बंगाली पुनर्जागरण के प्रमुख प्रबुद्ध विद्वानों में से एक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर का निधन 29 जुलाई 1891 के दिन हुआ। आगे रबीन्द्रनाथ टैगोर ने उनके बारे में कहा कि ऐसे तो भगवान ने लाखों बंगालियों को पैदा किया, लेकिन ईश्वर चन्द्र विद्यासागर भगवान द्वारा पैदा किए गए एकमात्र मनुष्य थे।

आज भी भारत में सामाजिक कुरीतियों जैसे कई अभिशाप कायम हैं जो महिलाओं का दमन करते हैं। ये कदाचार उनके सशक्तिकरण के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा हैं। सामाजिक व्यवस्था, परंपराएं, धर्म और रीति-रिवाज अक्सर इन सामाजिक बुराइयों को बढ़ावा देते हैं। कई क्षेत्रों में महिलाओं का एक बड़ा वर्ग अभी भी दयनीय स्थिति में है। वे शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पीछे हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। बाल-विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियां निरक्षरता से जुड़ी हैं।

यह शर्मनाक है कि लगभग एक करोड़ बीस लाख भारतीय बच्चों की शादी दस साल की उम्र से पहले कर दी गई थी, जैसा कि 2017 में जारी जनगणना के आंकड़ों में इंडिया स्पेंड के विश्लेषण से पता चला है। ऐसे में ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा दिखाया गया मार्ग महत्वपूर्ण और अनुकरणीय है। हमें यह याद रखना चाहिए कि महिला सशक्तिकरण के बिना – उनकी समानता, स्वतंत्रता और उत्थान, समाज और राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता।

उपसंहार :

आज के समय में आवश्यकता है कि देश की आधी आबादी यानि महिलाओं का प्रत्येक क्षेत्र में सशक्तिकरण किया जाये क्योंकि यही देश के विकास का आधार बनेंगी।भारत एक सुप्रसिद्ध देश है जिसने विविधता में एकता के मुहावरे को साबित करके दिखाया है। भारत के समाज में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। महिलाओं को प्रत्येक धर्म में एक भिन्न स्थान दिया गया है जो लोगों की आँखों को ढके हुए पर्दे के रूप में और बहुत वर्षों से आदर्श के रूप में महिलाओं के विरुद्ध बहुत सारे गलत कामों को जारी रखने में सहायता कर रहा है।प्राचीनकाल के भारतीय समाज में भेदभाव दस्तूरों के साथ-साथ सती प्रथा, नगर वधु व्यवस्था, दहेज प्रथा, यौन हिंसा, घरेलू हिंसा, गर्भ में बच्चियों की हत्या, पर्दा प्रथा, कार्य स्थल पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, बाल विवाह, देवदासी प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या आदि परंपरा थीं।पुरुष पारिवारिक सदस्यों के द्वारा सामाजिक राजनीतिक अधिकारों को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया गया है। महिलाओं के विरूद्ध बहुत से बुरे चलनों को खुले विचारों और महान भारतीय लोगों के द्वारा हटाया गया है और महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव पूर्ण कामों के लिए अपनी आवाज को उठाया। अंग्रेजों द्वारा सती प्रथा को खत्म करवाने के लिए राजा राम मोहन राय ने लगातार कोशिशें की थीं जिसमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई थी।इसके बाद बहुत से भारतीय समाज सुधारकों ने भी महिला उत्थान के लिए अपनी आवाज को बुलंद किया और बहुत संघर्ष किया। भारत देश में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिए ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने लगातार कोशिशों के द्वारा विधवा से पुर्न विवाह अधिनियम 1856 की शुरुआत करवाई थी।पिछले कुछ सालों में महिलाओं के विरुद्ध होने वाले लैंगिक असमानता और बुरी प्रथाओं को हटाने के लिए सरकार द्वारा बहुत सारे संवैधानिक और कानूनी अधिकार बनाये गये और उन्हें लागु किया गया है। ऐसे बड़े विषयों को सुलझाने के लिए महिलाओं सहित सभी के लगातार सहयोग की बहुत अधिक जरूरत है।

भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के विरुद्ध बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा जो समाज की पितृसत्तामक और पुरुष युक्त व्यवस्था है। यह बहुत आवश्यक है कि हम महिलाओं के विरुद्ध अपनी पुरानी सोच को बदलें और संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाये।

संदर्भ सूची

- Asok Sen, "Ishwar Chandra Vidyasagar and his Elusive Milestones", ISBN:9788178244853, 9788178244853.
- रचना भोला 'यामिनी ' ,"ईश्वर चंद्र विद्यासागर",ISBN:9789350483251
- Subal Chandra Mitra, "ISVAR CHANDRA VIDYASAGAR: A Story Of His Life And Work" ISBN-10 8188955841, ISBN-13 978-8188955848.
- https://navbharattimes.indiatimes.com
- http://ncert.nic.in